❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

विश्वदेवो महाँ असि।
– सामवेद 1026

हे विश्वदेव परमात्मन् ! तू महान है।
O the Lord of the universe ! You are the Greatest of all.

वर्ष 42, अंक 45 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 30 सितम्बर, 2019 से रविवार 6 अक्तूबर, 2019
विक्रमी सम्वत् 2076 सृष्टि सम्वत् 1960853120
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ:150वें वर्ष के अवसर पर

स्वर्ण शताब्दी वैदिक धर्म महासम्मेलन : तैयारियाँ अन्तिम चरण में

सारे देश से आर्यजनों के पहुंचने की सूचनाएँ : कार्यकर्त्ताओं में भारी उत्साह

आर्य संन्यासियों, वैदिक विद्वानों, गुरुकुलों के आचार्यों एवं वैदिक सिद्धान्तों को सुनने का स्वर्णिम अवसर

दिनांक 11-12-13 अक्तूबर, 2019 (शुक्र-शनि-रवि)

सम्मेलन स्थल रामनाथ चौधरी शोध संस्थान-वाटिका, सुन्दरपुर मार्ग, नरिया, लंका, वाराणसी

भव्य शोभायात्रा समापन समारोह के अवसर पर 13 अक्तूबर को विशाल एवं भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया जाएगा। समस्त आर्यसमाजों, गुरुकुलों, विद्यालयों, आर्यवीर/वीरांगना दलों के अधिकारियों से निवेदन है कि अपने-अपने बैनर के साथ भारी संख्या में सम्मिलित होकर आर्यसमाज की शक्ति का प्रदर्शन करें।

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर वैदिक धर्म महासम्मेलन को सफल बनाएँ

आपका सहयोग सादर अपेक्षित है

स्वर्ण शताब्दी वैदिक धर्म महासम्मेलन, वाराणसी के लिए कृपया अपना सहयोग 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से '15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001' के पते पर भेजें। आप अपनी दान राशि बैंक खाते में सीधे जमा कर सकते हैं। कृपया राशि जमा कराते ही श्री मनोज नेगी जी (9540040388) अथवा श्री अरुण सैनी (8527557756) को सूचित अवश्य करें ताकि आपको तत्काल रसीद भेजी जा सके। बैंक खाते का विवरण इस प्रकार है – 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' खाता सं. 09481000000276 IFSC Code : PSIB0020948 पंजाब एंड सिंध बैंक, कालकाजी

30 हजार बच्चों की नि:शुल्क शिक्षा, आवास एवं भोजन व्यवस्था देखकर हुए अभीभूत

पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी ने दिया आशीर्वाद एवं बताए जीवन में सफलता के सूत्र

कलिंगा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसीज (KISS) द्वारा 'लाइफ टाइम अचीवमैंट अवार्ड' से हुए सम्मानित

भुवनेश्वर में पद्मभूषण आर्यरत्न महाशय धर्मपाल जी का भव्य स्वागत

वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में अपना अनुपम योगदान देने वाले, हर-पल - हर क्षण आर्य समाज के उत्थान और उन्नति की कामना और भावना को मन में सजाकर रखने वाले, विश्व प्रसिद्ध दानवीर, कर्मवीर, पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी कलिंगा इंस्टिट्यूट सोशल सांइसीज (KISS), भुवनेश्वर उडीसा के अनुरोध पर महात्मा गांधी जी की 150वीं जंयती पर आयोजित एक दिवसीय शिविर में इंस्टीट्यूट के 30 हजार वे बच्चे जिन्हें संस्था द्वारा नि:शुल्क भोजन, आवास और शिक्षा की सुन्दर व्यवस्था की गई है, उन्हें महाशय जी अपना प्रेरणाप्रद अनुभवी उदबोधन और आशर्वाद देने के लिए जैसे ही भुवनेश्वर के एयरपोर्ट पर उतरे तो वहां के श्रुतिन्यास आश्रम एवं आर्य समाज भुवनेश्वर के अधिकारी, कार्यकर्त्ताओं और सदस्यों ने महाशय जी तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी का भव्य स्वागत किया।

इस अवसर पर आर्यसमाज भुवनेश्वर के प्रांगण में महाशय जी ने यज्ञ में आहुति दी और संपूर्ण विश्व के लिए मंगल कामना की। आर्य समाज में महाशय जी का भुवनेश्वर पधारने पर श्री विंदल जी, श्री प्रियव्रत दास जी, उनकी धर्म पत्नी श्रीमती शन्नोदेवी जी, आचार्य सुदर्शन देव जी और स्वामी सुधानंद सरस्वती जी इत्यादि महानुभावों ने स्वागत -अभिनंदन किया। इस अवसर पर दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने आर्यसमाज भुवनेश्वर के अधिकारियों, कार्यकर्त्ताओं और सदस्यों को महर्षि दयानंद जी के काशी शास्त्रार्थ के 150वें वर्ष पर आयोजित स्वर्ण शताब्दी

कलिंगा इंस्टीट्यूट आफ सोशल साइंसीज (KISS) द्वारा लाइफ टाईम एचीवमैंट अवार्ड प्राप्त करके प्रसन्नचित मुद्रा में महाशय धर्मपाल जी

ओडिशा राज्य के मुख्यमन्त्री श्री नवीन पटनायक जी का हृदय से अभिवादन स्वीकारते महाशय धर्मपाल जी। साथ में श्री विनय आर्य जी एवं किस्स के चेयरमैन एवं सांसद श्री अच्युतानन्द सामंत जी।

– जारी पृष्ठ 5 पर

वेद-स्वाध्याय

त्यागपूर्वक भोग

ईशा वास्यमिदꣳसर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्।। -यजु० 40/1
ऋषिः दीर्घतमाः ।। देवता - आत्मा ।। छन्दः अनुष्टुप्।।

शब्दार्थ - जगत्याम् = इस संसार में **यत् किंच** = जो कुछ भी **जगत्** = सृष्टि है वह **इदम्** = यह सामने दीखने वाला **सर्वम्** = सभी कुछ **ईशा** = ईश से, ईश्वर से **वास्यम्** = बसा हुआ है, व्याप्त है, अत: **तेन** = उस ईश्वर से **त्यक्तेन** = त्याग किये हुए, दिये हुए धन से ही **भुंजीथाः** = तू अपना भोग प्राप्त कर, **कस्यचित्** = किसी दूसरे के **धनम्** = धन की कभी **मा गृधः** = चाह मत कर।

विनय-हे मनुष्य ! बिना पूछे-ताछे, बिना जाने-बूझे तूने उत्पन्न होते ही संसार के ऐश्वर्यों को भोगना शुरू कर दिया है, पर क्या तूने कभी यह भी पता लगाया है कि यह ऐश्वर्य, धन किसका है? इस धन का ईश कौन है, स्वामी कौन है? अरे, इसका स्वामी तो प्रत्येक स्थान पर विद्यमान है। वह न दीखता हुआ भी हर वस्तु में रमा हुआ है। इस जगतीतल पर यह जो भी कुछ जगत् दीख रहा है, पदार्थजात विद्यमान है, वह सब इस ईश से बसा हुआ है, इससे अधिकृत हुआ-हुआ है। तुझे चाहिए कि तू उस ईश की अनुमति पाकर ही इन ऐश्वर्यों का भोग कर, अर्थात् तेरे अन्दर बैठा हुआ वह ईश तुझे जो कुछ दे रहा है उसी का भोग कर। दूसरे को दिये गये धन को देखकर तू कभी मत ललचा! वह उसी के लिए दिया गया है। सब धन तो उस ईश का ही है और वह हमारे कल्याण के लिए और जगत्-कल्याण के लिए हम मनुष्यों को यथायोग्य धन देता है, इसलिए तू कभी लोभ मत कर! दूसरे को दिये गये धन पर दृष्टिपात मत कर! जो कुछ तुझे दिया है उसका ही सन्तोष के साथ भोग कर। इसी में तेरा कल्याण है और फिर तू इस प्राप्त धन का भी त्यागपूर्वक भोग कर। जो कुछ तेरे सामने आता है उसमें से यज्ञ का भाग निकालकर जो शेष बचे उसे ही अपने लिए समझ। यह यज्ञ-भाग तो उस ईश का भाग हे। उससे जो कुछ छूटे, त्यक्त हो, उसी त्यक्त से तू अपना काम चला, उपभोग कर और इस अमृत का उपभोग भी तू सदा ईशार्पण करके कर। तू और तेरा सब-कुछ भी उस ईश का ही तो है! अत: तू जो कुछ भोगता है उसे सदा इसी भावना से भोग कि इसके भोगने से जो तेरी शारीरिक, मानसिक और आत्मिक पुष्टि होगी वह उस ईश के काम के लिए होगी, ईश की सेवा के लिए होगी। देख, इस जगत् में ईश के इस सब धन को भोगने का यही एक नियम (कानून) है, एकमात्र यही ठीक विधि (तरीका = प्रकार) है।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

भारत का इतिहास किसने लिखा?

.....झूठे इतिहास का परिणाम आज हमारे सामने है। लुटेरे और चोरों को आज लोग बादशाह सुल्तान नामों से पुकारते हैं। उनके नाम पर सड़के बनाते हैं। शहरों के नाम रखते हैं और उसका कोई विरोध भी नहीं करता। एक कहावत है कि इतिहास बदलो, मन बदलो और गुलाम बनाओ। यह कहावत भारत के संदर्भ में सटीक बैठती है क्योंकि यही आज तक होता आया है। ऐसे में रोमिला थापर हो या भारत के दो टुकड़े करने की सलाह देने वाले इतिहासकार रामचन्द्र गुहा और इरफान हबीब जब तक इनका कोई विरोध नहीं करेगा तब तक इतिहास के जरिये देश की संस्कृति पर आक्रमण होते रहेंगे।.....

महाभारत का युद्ध जीतने के बाद हस्तिनापुर पहुंचकर जब युधिष्ठिर ने सत्ता संभालने से इंकार किया तब हो सकता है कि युधिष्ठिर मन में चन्द्रगुप्त मोर्य के पोते सम्राट अशोक की छवि रही हो। ये बात कोई छोटा-मोटा नेता या अभिनेता आदि कह देता तो एक बारगी सोच लिया जाता कि हो सकता इन्हें इतिहास का ज्ञान कम होगा, लेकिन जब यह बात देश की सबसे बड़ी इतिहासकार रोमिला थापर कहे तो क्या सोचा जाये? जबकि अशोक और महाभारत के काल में एक-दो सदियों का नहीं बल्कि एक युग का अंतर है।

ऐसे एक नहीं बल्कि पिछले कई दशकों से रोमिला थापर जैसे कई वामपंथी इतिहासकारों का बड़ा बोलबाला रहा है। वैसे तो कई और दरबारी इतिहासकार भी हैं लेकिन इनमें रोमिला थापर, ईरफान हबीब और रामचंद्र गुहा का नाम प्रमुखता से शामिल है। रोमिला थापर जवाहरलाल लाल नेहरु विश्वविद्यालय दिल्ली की ताउम्र से प्रोफेसर हैं और खुद अपने को विश्वविद्यालय का डायनासोर' कहती हैं। उनका कथन देखा जाये तो 'बड़ा आकार और छोटी बुद्धि वाले' की संज्ञा उनके लिए सटीक है।

बात यहीं खत्म नहीं होती क्योंकि सवाल उनके इसी कथन से उभरकर सामने आये हैं कि आखिर इन इतिहासकारों ने देश और समाज को क्या दिया? इनके लिखे इतिहास से इस देश की अगली पीढ़ी क्या सीखेगी? यही कि सम्राट अशोक के बाद कौरव और पांडव हुए और महाभारत का युद्ध हुआ? हालाँकि शुरू से ही अपने कथित इतिहास लेखन में रोमिला ने भारत को तोड़ने-मरोड़ने, नीचा दिखाने का ही काम किया है। इस बात की गवाही खुद उनकी भाभी, और प्रसिद्ध विदुषी राज थापर ने भी दी थी जो प्रसिद्ध अंग्रेजी मासिक सेमिनार की संस्थापक, संपादक थीं। राज थापर ने अपनी आत्मकथा 'ऑल दीज इयर्स' में 1980 की एक घटना का उल्लेख किया है। जब कांग्रेस नेता डॉ कर्ण सिंह ने अपने मित्र रोमेश थापर से शिकायत की कि उनकी बहन रोमिला अपने इतिहास-लेखन से भारत को नष्ट कर रही हैं। तब कर्ण सिंह की रोमेश से तकरार भी हो गई थी क्योंकि रोमिला का लेखन, भाषण, अध्यापन और प्रचार का मुख्य स्वर सदैव हिंदू-निंदा और इस्लाम-परस्ती रहा है।

रोमिला ही क्यों यदि अन्य वामपंथी इतिहासकारों का भी यदि लेखन भी देखा जाये तो इनके मानसिक दिवालियेपन के अनूठे कारनामों से हमारा इतिहास भरा पड़ा है। इन्होंने देश के इतिहास की किताबों में संस्कृति और सभ्यता के बड़े दौर और उसकी कामयाबियों को न केवल कम किया बल्कि उसे गलत तरीके से बताया गया। इसी कारण इस्लाम, ईसाइयत और वामपंथ जैसी बाहरी अवधारणाओं ने हमारे इतिहास, हिंदू संस्कृति और सभ्यता को गहरा नुकसान पहुंचाया है। यूनान, तुर्क, अरब से आये विदेशी हमलावरों ने न केवल भारत की संस्कृति, वैभव और सम्पदा को लूटा बल्कि करोड़ों लोगों का नरसंहार भी किया। भारत की धरती को रक्तरंजित करने और गौरवशाली इतिहास को जितना तहस-नहस मुस्लिम आक्रमणकारियों और मुगल साम्राज्य ने किया उतना शायद किसी ने नहीं किया! लेकिन भारत का दुर्भाग्य मानिये कि यहाँ के वामपंथी इतिहासकारों और बुद्धिजीवियों ने भारत के रक्तरंजित इतिहास में आक्रांताओं और मुगलों की रक्तलोलुपता को अपनी स्याह स्याही से ढककर उन्हें महान बना दिया और इस भारतभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राण न्योछावर करने वाले वीर राजाओं को इतिहास से मिटा दिया।

हमें पढ़ाया जाता है कि अकबर महान शासक था उसके राज्य में प्रजा बड़ी सुखी और संपन्न थी। अब एक पल को सोचिए यदि ऐसा था तो महाराणा प्रताप अकबर से क्यों टकराया? बस इसी बात से समझ जाना चाहिए कि भारतीय इतिहास पर इन लोगों का लम्बे समय तक कब्जा रहा, कुछ अन्य तथाकथित इतिहासकार अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय की उपज थे, जिन्होंने नूरुल हसन और इरफान हबीब की अगुआई में इस प्रकार इतिहास को विकृत कर दिया।

असली तथ्यों को तोड़-मरोड़कर ही नहीं नये तथ्यों को गढ़कर भी ये इतिहासकार यह सिद्ध करना चाहते थे कि भारत में जो भी गौरवशाली है वह मुगल बादशाहों द्वारा दिया गया है और उनके विरुद्ध संघर्ष करने वाले महाराणा प्रताप, वीर शिवाजी आदि पथभ्रष्ट हिन्दू राजा थे। अफसोस ये लोग देश के नौनिहालों को यह झूठा ज्ञान दिलाने में सफल रहे कि भारत का सारा इतिहास केवल पराजयों और गुलामी का इतिहास है और यह कि भारत का सबसे अच्छा समय केवल तब था जब देश पर मुगल बादशाहों का शासन था।

इन लोगों ने जैसा चाहा वैसा लिखते गये तत्कालीन सरकारों ने कभी सुध नहीं ली और प्राचीन हिन्दू गौरव गाथा वाले इतिहास को या तो काला कर दिया या धुँधला कर दिया। राम को काल्पनिक राजा बना दिया, आर्यों को विदेशी बना दिया, आर्य और द्रविड़ जैसी खाई खोद डाली। जो सभ्यता कभी सरस्वती नदी के किनारे विकसित हुई थी यानि जो वैदिक सभ्यता थी, जिसे वामपंथियों ने सिंधु घाटी सभ्यता नाम दिया। खुदाई में निकले सारे पुरातत्वाशेषों ने हमारे वेदों में लिखी बातों को सिद्ध कर दिया है कि आर्य कहीं बाहर से नहीं आए थे और विश्व की सबसे प्राचीन और विकसित सभ्यता भारत की वैदिक संस्कृति और सभ्यता थी। उसी संस्कृति और सभ्यता में लोग सुखी और संपन्न थे।

अकूत धन सम्पदा के कारण ही विदेशी आक्रांतों को भारत में आक्रमण के लिए प्रेरित किया। लेकिन ऐसे सच नहीं लिखा गया और झूठे इतिहास का परिणाम आज हमारे सामने है। लुटेरे और चोरों को आज लोग बादशाह/सुल्तान आदि नामों से पुकारते हैं। उनके नाम पर सड़के बनाते हैं। शहरों के नाम रखते हैं और उसका कोई विरोध भी नहीं करता। एक कहावत है कि 'इतिहास बदलो, मन बदलो और गुलाम बनाओ।' यह कहावत भारत के संदर्भ में सटीक बैठती है क्योंकि यहां आज तक यही होता आया है। ऐसे में रोमिला थापर हो या भारत के दो टुकड़े करने की सलाह देने वाले इतिहासकार रामचन्द्र गुहा और इरफान हबीब, जब तक इनका कोई विरोध नहीं होगा तब तक इतिहास के जरिये देश की संस्कृति पर आक्रमण होते रहेंगे। एक दिन हमारे धार्मिक ग्रन्थ किस्से कहानियां उनके पात्र काल्पनिक बनकर रह जायेंगे।

- सम्पादक

शब्द भी यात्राएं करते हैं !

- डॉ. पूर्ण सिंह डबास

प्रसिद्ध कवि श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' ने अपनी काव्य-रचना **रश्मिरथी** में कहा है कि नदियों और वीरों का मूल जानना बड़ा कठिन है। मुझे लगता है कि यह बात शब्दों के मूल पर और भी अधिक लागू होती है। जिस प्रकार नदी का मूल-स्रोत जानने के लिए हम उसकी धारा के विपरीत यात्रा शुरू करते हैं उसी प्रकार किसी शब्द का मूल-स्रोत जानने के लिए भी भाषा की धाराओं का सहारा लेकर भूत काल की ओर कदम बढ़ाते हैं। कुछ समय चलने के बाद देखते हैं कि आगे रास्ता बन्द हो गया है और उसी बिन्दु को उस शब्द का मूल मानकर संतुष्ट हो जाते हैं जबकि वास्तविकता यह है कि वह बिन्दु उस शब्द का मूल बिन्दु न होकर हमारे उस वक्त के ज्ञान की सीमाओं का ही अंतिम बिन्दु होता है। खैर ! जो भी हो शब्दों के जन्म और फिर उनकी यात्राओं के बारे में जानना है बड़ी रोचक बात। शब्दों की यह यात्रा जहां हमें रोमांचित कर देती है वहां अपने बोलने वालों की भू-यात्राओं और उनके तथ्यों-रहस्यों को भी उजागर करती है। यदि हम शब्दों के जीवन की तुलना मनुष्य के जीवन से करें तो देखेंगे कि उनका जीवन भी मानवीय जीवन की तरह रहस्य-रोमांच से परिपूर्ण है। मनुष्य-जीवन में घटने वाली जन्म-वृद्धि, सबलता-दुर्बलता, विस्तार-संकोच, उन्नति-अवनति, पर्यटन तथा मृत्यु आदि की सभी स्थितियाँ शब्दों के जीवन में भी पाई जाती हैं।

शब्दों के पर्यटन या एक भाषा से दूसरी भाषा में जाने का इतिहास बहुत ही रोचक है और इस विषय में निस्संकोच कहा जा सकता है कि संसार की कोई भी भाषा ऐसी नहीं है जिसमें किसी दूसरी भाषा के शब्द न पहुंचे हों। असल में प्राचीन काल से ही भारतीय-अभारतीय अनेक शब्द लम्बी एवं साहसपूर्ण यात्राए करते हुए संसार के दूर-दराज के क्षेत्रों में पहुंचते रहे हैं। आप भी किसी शब्द की उंगली पकड़कर उस के साथ चल दीजिए तो आप पाएंगे कि वह अनेक ऐतिहासिक, भौगोलिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक तथ्यों को उजागर करता हुआ, आपको बहुत बड़े भू-भाग की यात्रा करा देगा। इतना ही नहीं कभी-कभी तो अनेक देशों की यात्राएं कराते हुए वहीं ले आएगा जहां से आपको लेकर चला था। उदाहरण के लिए संस्कृत के **नागरङ्ग** या **नागरङ्क** शब्द को लीजिए जिसका अर्थ है 'नाग अर्थात सिंदूर के रंग का' एक फल। थोड़ा परिवर्तित होकर संस्कृत में इसका एक रूप **नारङ्ग** भी मिलता है जिससे अनेक भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त नारंग, नारंगी, नौरंगी तथा नरंगी आदि शब्द विकसित हुए हैं। आप इसका हाथ थामे रहिए तो यह आपको ईरान ले जाएगा जहां की भाषा फारसी में इसने (भारत की अनेक भाषाओं की तरह) पुल्लिंग रूप में **नारंग** (= संतरा) तथा स्त्रीलिंग रूप में **नारंगी** (= संतरे से छोटा लेकिन अधिक मीठा फल(चीनी संतरा) का रूप धारण कर लिया। वहाँ से यह अरब देशों में पहुंचा जहां **ग** का **ज** में परिवर्तन होने से नारंग का रूप **नारंज** हो गया। अरब देशों से होता हुआ यह दक्षिणी फ्रांस में बोली जाने वाली प्राचीन प्रोवेन्शल (Provencal) भाषा में पहुंचा जहां **नारंज** के **न** का लोप हो जाने से इसका रूप **औरंज** (auranja) हो गया। प्राचीन प्रोवेन्शल से यह इसी रूप में मध्यकालीन फ्रांसीसी में पहुंचा। भला इतना उत्साही यात्री फ्रांस में ही कैसे रुक सकता था। इसने इंग्लिश चैनल पर से छलांग लगाई और इंग्लैंड में पहुंच गया। आप भी इसके साथ छलांग लगाएं और देखें कि मध्यकालीन अंग्रेजी में इसके दो रूप मिलते हैं, Orenge तथा Orange। इसे तो अब भी यात्रा की हड़बड़ी थी। जब मध्यकालीन अंग्रेजी से इसने आधुनिक अंग्रेजी की तरफ दौड़ लगाई तो इस हड़बड़ी में इसका orenge रूप तो वहीं छूट गया और सिर्फ Orange रूप आधुनिक अंग्रेजी तक पहुंच पाया। इतनी लंबी यात्रा के बाद तो सभी थक जाते हैं। ऐसी हालत में अगर यह आप से कहे कि चलिए हवाई जहाज में बैठें और वापस अपनी जन्म भूमि में चलें तो आप मना मत कीजिए और इसका साथ दीजिए। क्योंकि जब यह वापस पहुँचकर **नारङ्ग** से कहेगा कि मैं तो तुम्हारा ही रूप, तुम्हारा ही सहोदर हूं, तो उसे विश्वास दिलाने के लिए, एक सहयात्री के रूप में, आप की गवाही की जरूरत पड़ेगी।

.....संस्कृत का सिन्धु (मूलतः पानी, सागर, फिर नदी विशेष, फिर उस नदी के आस-पास का प्रदेश) स्थान-भेद और काल-प्रवाह के साथ अरबी और फारसी में हिंद (=भारत; भारतीय);(हिन्दू (=भारतीय, भारत के निवासी);(फारसी में हिंदी (=भारतीय या हिंद का; भारत की कोई भी वस्तु); चीनी में शनदू/इंदु/इंतु (=भारत);(तुर्की में हिंदिया तथा रूसी में ईंजिया बन गया। इससे आगे बढ़ते हुए जब इसने ग्रीक में इंदीअ (=भारत), वहाँ से लैटिन में जाकर इंदिया और फिर अंग्रेजी तक पहुंचकर इंडिया रूप धारण कर लिया तो बहुतों ने सोचा कि अंग्रेजों ने हमारे देश का नाम बदलकर बड़ी साजिश रच डाली है।.....

इसी प्रकार संस्कृत का **शर्करा** शब्द अरब देशों से होता हुआ जब इंग्लैंड पहुंचा तो रूपांतरित होकर **शूगॅ** (Sugar) हो चुका था और संस्कृत का **स्वादु** (जिसका मूल अर्थ 'मीठा' है) जब यूनान, इटली, जर्मनी तथा फ्रांस होता हुआ लंदन पहुंचा तो वहाँ **स्वीट** (sweet) का रूप धारण कर चुका था। इतना ही नहीं हिन्दी **बैंगन** का जनक संस्कृत **वाटिंगण,** इंग्लैंड पहुंचते-पहुंचते इतना घिसा-पिटा कि इसकी आकृति बदलकर **ब्रिंजाल** (Brinjal) हो गई। संस्कृत **ध्यान** के तो कहने ही क्या ! भारतीय योग-दर्शन का यह शब्द जब बौद्ध साधुओं के द्वारा चीन और जापान पहुँचा तो कुछ-कुछ **छ़ान, च़ान** या **झ़ान** जैसा बन गया और जब लम्बी यात्रा के बाद इंग्लैंड पहुंचा तो यह **ज़ॉन** रूप ध ारण कर चुका था। परिणामत: हजारों साल बाद जब भारत लौटा तो अंग्रेजी के रंग में रंगकर और योग से बिल्कुल पल्ला झाड़कर मारुति-सुजुकी कम्पनी की उस गाड़ी के रूप में जो आज कल **ज़ेॅन** या **ज़ैॅन** (Zen) नाम से भारतीय सड़कों पर दौड़ती दिखाई देती है। अंग्रेजी का **कैंडी** (Candy) शब्द चीनी या खांड को उबालकर बनाई जाने वाली एक प्रकार की मिठाई अथवा किसी भी मिठाई का अर्थ देता है (कुछ पहले तक इस का पूरा रूप sugar candy प्रचलित रहा है) जो कि अरबी **क़ंद** का रूपांतरण है। फारसी में यह **कांद** रूप में मिलता है और इन सब का मूल संस्कृत **खाण्डव** (=हिंन्दी खांड) में निहित है। इसी प्रकार **समय** तथा **ऋतु** का बोधक अरबी **मौसम** जब पुर्तगाल आदि से होता हुआ इंग्लैंड पहुंचा तो वहाँ इसका स्वागत बरसात लाने वाली पवन **मानसून** के रूप में किया गया।

जब कोई किसी से विदा लेता है तो उसकी सुखद और सुरक्षित यात्रा की कामना करने का प्रचलन सभी समाजों में है। 'आपकी यात्रा शुभ हो', ईश्वर आपकी रक्षा करें' तथा 'खुदा हाफ़िज' (=खुदा आप की हिफाज़त या रक्षा करे) आदि वाक्य इसी कामना की ओर संकेत करते हैं। अंग्रेजी भाषी समाज में विदाई के समय ऐसी कामना करते हुए 'God be with you' (=ईश्वर आप के साथ रहे, या आपकी रक्षा करे) का वाक्य बोला जाता रहा है। धीरे-धीरे, भाषा में पाई जाने वाली संक्षेपण की प्रवृत्ति के कारण, यह वाक्य केवल 'God be' के रूप में संक्षिप्त हुआ और फिर **good by**/गुड बाई का रूप धारण करते हुए एक निरर्थक-सा वाक्यांश बन गया। लेकिन इसके बावजूद वह 'शुभ यात्रा' का संदेश देता रहा। समय बीतने के साथ इसका 'गुड' भी निकल गया और केवल **बाई/by** रह गया। अब कुछ लोग तो केवल 'बाई' बोलते हैं और कुछ इसकी आवृत्ति करते हुए **बाई-बाई** भी। इसके बोलने वालों को यह तो पता नहीं कि यह 'God be with you' का घिसा हुआ एक निरर्थक रूप है लेकिन परम्परा के कारण यह जरूर पता है कि विदाई के समय परस्पर ऐसा कहा जाना चाहिए।

अरबी में **खजूर** को **तम्र** कहते हैं। अरब लोगों का जब भारत से संपर्क हुआ तो उन्होंने यहां इमली का फल देखा जो उनके खजूर अर्थात् **तम्र** से मिलता-जुलता था। इसी आधार पर उन्होंने इमली को **तम्र-इ-हिंदी** या **तम्र-इ-हिंद** कहा अर्थात् 'हिंद का खजूर'। यही **तम्र-इ-हिंद** सफर करता हुआ अंग्रेजी में पहुंचा और वहाँ '**टैमॅरिन्ड**' (Tamarind) बन गया। संस्कृत का **यजन** अवेस्ता में **यस्न** रूप में पहुँचा और फारसी में **यश्न** रूप में। फारसी के इस **यश्न** में और परिवर्तन आया तथा इसने **जश्न** का रूप धारण कर लिया। इस प्रकार **यजन** का रूप तो बदला ही इसका अर्थ भी बदल कर लगभग विपरीत हो गया। कहां **यजन** या **यज्ञ** की शांति और कहां **जश्न** का हो-हल्ला। फारसी के **कारवाँ** की कहानी भी कम रोचक नहीं है। यह फ्रांसीसी Caravane से होता हुआ अंग्रेजी में जाकर **कैरावैन** (Caravan) तो बना ही, संक्षिप्त होकर सामान ढोने की गाड़ी **वैन** (Van) भी बन गया। संस्कृत की सघोष महाप्राण ध्वनियाँ-**घ, ध, भ** -भारतीय आर्य भाषाओं के अतिरिक्त कहीं और नहीं मिलती। ऐसी स्थिति में जब इन ध्वनियों वाले शब्द, इन ध्वनियों से रहित भाषाओं में जाते हैं तो वहां पर ये ध्वनियाँ अपनी निकटतम अघोष-महाप्राण या सघोष-अल्प प्राण ध्वनियों में बदल जाती है। उदाहरण के लिए संस्कृत का **घर्म** (=ताप, गर्मी, घाम, ग्रीष्म ऋतु) जब फारसी में पहुँचता है तो **घ** का **ग** हो जाने से **गर्म** बन जाता है और ग्रीक में जाने पर **घ** के **थ** में परिवर्तन से **थर्मो-स** (thermo-s=गर्म) एवं **थर्मे** (Thermé=गर्मी) का रूप धारण कर लेता है। ग्रीक के यही रूपांतरण अंग्रेजी के **therm-, thermal-** तथा **thermo-** आदि में दिखाई देते हैं जिनसे अंग्रेजी में **थर्मस** (thermos);(**थर्मामीटर** (thermometer);(**थर्मोस्टेट** (thermostat = ताप-स्थायी);(**थर्मल पावर** (thermal power=ताप ऊर्जा); (**थर्मोन्यूक्लिअर** (thermonuclear = ताप नाभिकीय) तथा **थर्मोग्राफ** (thermograph=ताप लेखी) आदि

- *जारी पृष्ठ 6 पर*

प्रेरक प्रसंग

उत्तर प्रदेश में एक आर्य ललना की दहाड़

देश के स्वाधीनता संग्राम में नवयुवक जेलें भर रहे थे। आर्यसमाज के शास्त्रार्थ महारथी पहलवान इन्द्रवर्मा ने भी सत्याग्रह किया। हाथी की सूँड के समान उनकी भुजाओं में हथकड़ी पूरी नहीं आ रही थी। जनसाधारण में स्वतन्त्रता के लिए कारागार में जानेवालों के लिए प्यार व सत्कार था, परन्तु पुलिस का आतंक भी तो कम न था। चारों ओर धूम मच गई कि पण्डित इन्द्रवर्मा कारावास ले-जाए जा रहे हैं। जनता का भय भगाने के लिए पण्डित वर्माजी की पत्नी एक गीत गाती हुई लोगों में जोश भर रही थीं। इस गीत की दो पंक्तियाँ श्री पण्डित ओंकार मिश्र 'प्रणव' को अब भी याद हैं। आपने बाल्यकाल में यह दृश्य देखा था।

मैं पब्लिक में सुन आई री,
सिंहनी को जाया वर्मा।

पब्लिक (जनता) का कहना यथार्थ ही था कि इन्द्रवर्मा सिंहनी का पूत है। ग्रामीण आर्यमहिला की दहाड़ सुनकर जन साधारण में प्रेम की भावनाएँ भड़क उठीं। लोगों के जोश का कोई ठिकाना ही न था। क्रान्तिकारी सावरकर ने 1857 ई. में ठीक ही कहा था कि देश को स्वतन्त्र करवाने में उनका भी योगदान है जो देशभक्तों के साथ सहानुभूति रखते थे तथा उनके लिए मूक प्रार्थनाएँ करते रहे। इन्द्रवर्माजी की पत्नी भले ही स्वयं जेल में नहीं गई, परन्तु जब पति कारावास में यातनाएँ झेल रहा था तो वे घर में पिस रही थीं और उसने अपने क्षेत्र में जनता को जगाया।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ:150वें वर्ष के अवसर पर स्वर्ण शताब्दी वैदिक धर्म महासम्मेलन

महासम्मेलन को लेकर विशेष बैठक सम्पन्न : 'जहाँ कोई नहीं, वहाँ हम' का किया संकल्प

युग प्रवर्तक महर्षि देव दयानंद सरस्वती जी ने 150, वर्ष पूर्व पौराणिकों के गढ़ काशी (वाराणसी) में घोर विरोधियों के बीच अपने वैदिक ज्ञान के तपोबल से शास्त्रार्थ में विजय प्राप्त करके वैदिक धर्म संस्कृति और संस्कारों का प्रचार-प्रसार किया था। महर्षि के इस शास्त्रार्थ की विजय को आर्यजनों की अनुपम उपलब्धि मानते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कुशल निर्देशन में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, सार्वदेशिक आर्यवीर दल, जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, वाराणसी एवं काशी शास्त्रार्थ स्मृति न्यास के संयुक्त तत्वावधान में आगामी 11 से 13 अक्तूबर 2019, महर्षि दयानंद काशी शास्त्रार्थ-150 वें वर्ष पर स्वर्ण शताब्दी वैदिक धर्म महासम्मेलन का भव्य-विराट और विशाल आयोजन किया जा रहा है। इस महान आयोजन को लेकर पूरे भारत वर्ष और विश्व के आर्यजनों में उमंग-उत्साह की लहर है। यह लहर क्यों न हो?

जब एक तरफ ऋषि देव दयानन्द और
दूसरी तरफ सारा जमाना था,
सारे अपने विरोधियों के बीच बीच
ऋषिवर एक बेगाना था,
ऋषि ने ज्ञान की ऐसी ज्योत जलाई,
झूठे आडबंर,
ढोंग-पांखडियों की भीड़ हराई।
अज्ञान के गहन अंधेरों में उजाला हो गया,
हमारा प्यारे ऋषि का ज्ञान जीत गया,
चारों तरफ ऋषि का
जय-जयकार होने लगा,
वैदिक धर्म का डंका बज गया।

वैदिक धर्म विजय की इन अदभुत स्मृतियों को पुन: अनुभूत करने का सुअवसर है-महर्षि दयानंद सरस्वती जी द्वारा काशी शास्त्रार्थ विजय के 150 वें वर्ष के अवसर पर स्वर्ण शताब्दी वैदिक धर्म महासम्मेलन। इसलिए संपूर्ण विश्व के आर्यजनों में अत्यंत प्रसन्नता की लहर है।

इस महान आयोजन को लेकर काशी में अब तक कई बार गोष्ठियों का आयोजन हुआ। पिछले दिनों 13 सितंबर को सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचंद्र आर्य जी और दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी के नेतृत्व में काशी में

बैठक में उपस्थित सर्वश्री श्री अशोक त्रिपाठी, सतीश चड्डा, श्री सुरिंद्र चौधरी, श्री बृहस्पति आर्य, श्री प्रमोद आर्य आर्षेय, श्री दिनेश कुमार आर्य एवं अन्य कार्यकर्ता

समुचित व्यवस्थाओं को लेकर गहन चिंतन-मनन किया गया, जिसमें सभी आयोजक सभाएं उपस्थित रहीं, इससे पूर्व भी दिल्ली सभा कार्यालय में विशेष बैठकों के कई आयोजन हुए। अभी 29 सितंबर को वैदिक धर्म महासम्मेलन स्थल पर श्री अशोक त्रिपाठी, उपप्रधान जिला आर्य प्रतिनिधि सभा वाराणसी की अध्यक्षता में व्यवस्थाओं को लेकर विशेष मंत्रणा की गई। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा से श्री सतीश चड्डा जी, व्यवस्था संयोजक, श्री सुरेंद्र चौधरी, विभिन्न व्यवस्थाओं के सहसंयोजक तथा श्री बृहस्पति आर्य, महामंत्री आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश, श्री प्रमोद आर्य आर्षेय, श्री दिनेश कुमार आर्य तथा आर्यसमाज लल्लापुरा, भोजूवीर, मुगल सराय, भोगावीर, पिंडरा, चितईपुर, शिवपुरी, आजमगढ़, शाहंशाहपुर तथा मातृ मंदिर कन्या गुरुकुल के प्रधान, मंत्री तथा अन्य अधिकारियों के साथ हर व्यवस्था पर विस्तार पूर्वक चर्चा हुई। सबको सकारात्मक रूप से प्रेरित किया गया कि अब केवल आयोजन के 12-13 दिन बचे हैं, हमें अपनी व्यवस्थाओं को बिल्कुल दुरुस्त करना है तथा हर संभव प्रयास करना है कि जो भी आर्यजन विभिन्न स्थानों से आएंगे, उनकी अच्छी तरह से सेवा हो, कार्यक्रम रुचिकर व सुंदर बने, विद्वानों का मान-सम्मान हो, उसके लिए हम सभी **"जहां कोई नहीं, वहां हम"** की भावना से कार्यक्रम को सफलतापूर्वक आयोजित का सभा ने संकल्प लिया।

- सतीश चड्डा, व्यवस्था संयोजक

महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ के
150वें वर्ष के अवसर पर
स्वर्ण शताब्दी वैदिक धर्म महासम्मेलन
11-12-13 अक्तूबर, 2019 भाग लेने हेतु

वाराणसी यात्रा

आर्यजन अपने ग्रुप का रेलवे आरक्षण अवश्य करवा लें। आपके आवास की सामान्य व्यवस्था गुरुकुलों, आर्यसमाजों और धर्मशालाओं में नि:शुल्क की जाएगी।

दिल्ली एव आस-पास के आर्यजन महासम्मेलन में सम्मिलित होने अथवा अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :- श्री शिव कुमार मदान (9310474979) श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता (8010293949) श्री सुनेहरीलाल यादव (8383092581) श्री सुखवीर सिंह (9350502175) श्री सतीश चड्डा (9313013123)

निवेदक : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा-15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ:150वें वर्ष के अवसर पर
स्वर्ण शताब्दी वैदिक धर्म महासम्मेलन

-: विशेष सूचना :-

जो श्रद्धालु महानुभाव वैदिक धर्म महासम्मेलन वाराणसी में भाग लेने के लिए हवाई जहाज, रेल अथवा सड़क यातायात के माध्यम से पहुंच रहे हैं वे आवास व्यवस्था हेतु अपनी सूचना 9540086759 पर व्हाट्सएप्प करें अथवा sammelanvaranasi@gmail.com ईमेल करें।

1. आने वाले व्यक्तियों की संख्या : .....
2. ग्रुप लीडर का नाम : .....
3. ग्रुप लीडर का फोन नं. : .....
   (एक अतिरिक्त नं. भी दें) : .....
4. कहाँ से आ रहे है : .....
5. वाराणसी पहुंचने की तिथि : .....
6. वाराणसी किस स्टेशन पर पहुचेंगे : .....
7. ट्रेन का पहुचने का समय : .....
8. वापसी की तिथि : .....
9. वापसी का समय और स्टेशन : .....

यदि आप ग्रुप में न आकर व्यक्तिगत आ रहे है, तब भी यह सूचना व्यक्तिगत रूप में भेजे। यह सूचना अगर पहले ही दे दी गयी है तो दोबारा न भेजें। कृपया उपरोक्त सूचना भेजकर सहयोग करें, हम आपको बेहतर और आरामदायक सुविधा देने के लिए प्रयासरत हैं।

- सतीश चड्डा, व्यवस्था संयोजक

वैचारिक क्रान्ति के लिए
महर्षि दयानन्दकृत
"सत्यार्थ प्रकाश"
पढ़ें और पढ़ावें

आओ काशी में आओ

हाथों में ओम का झण्डा,
होठों पे वैदिक नारा-2
आया शास्त्रार्थ स्वर्ण
शताब्दी,
समारोह प्यारा-प्यारा।
ऋषिवर के ऋण को
चुकाओ
आओ काशी में आओ-2
जिस काशी में ऋषि
दयानन्द,
सात बार आए।
जब-जब आए अपने तर्क से,
पाखण्डियों को हिलाए।
दी चुनौती शास्त्रार्थ की,
धर्म के ठेकेदारों को,
आया था भूकम्प यहां,
सुन ऋषिवर के ललकारों को।
एक तरफ पंडे-पुजारियों
की सारी तैयारी।
शास्त्रार्थ में ऋषिवर ने जब
तर्क का बाण चलाया,
पाखण्डियों ने ऋषिवर पर,
इटें-पत्थर बरसाया।
फिर भी स्वामी ना घबराये,
ऋषि सत्य से ना कतराये,
कुछ बुद्धि जीवी लोगों ने,
ऋषिवर के जान बचाई।
कहता है इतिहास यहां,
ऋषिवर ने जीत थी पायी,
काशी के हर घर-घर ने,
ऋषि की जयकार लगायी।
उस दिन को भूल ना
जाओ-
आओ काशी में आओ।।
हाथों में ओम का.....
जिस काशी में ऋषिवर ने,
वेदों का उद्घोष किया।
गंगा के तट को वैदिक ज्ञान से
पावन किया,
रामनगर का किला जहां,
ऋषि ने आसन था जमाया,
काशी नरेश ने बड़े आदर से,
ऋषिवर को शीश झुकाया।
दुर्गाकुण्ड का आनन्द बाग,
आज भी याद दिलाये,
जिन पेड़ों के नीचे ऋषि ने,
पहल रात बिताये।

- रवि प्रकाश आर्य

प्रथम पृष्ठ का शेष

भुवनेश्वर में पद्मभूषण आर्यरत्न महाशय धर्मपाल जी ....

वैदिक धर्म महासम्मेलन में आने का सादर निमंत्रण दिया, जिसे सभी ने सहर्ष स्वीकार करते हुए ऋषि दयानंद का जय-जय कार किया। उस समय आर्य समाज भुवनेश्वर का संपूर्ण वातावरण ऋषिमय हो गया था। 96 वर्षीय महाशय जी को अपने बीच पाकर सभी महानुभावों में उमंग-उत्साह और उल्लास व्याप्त था।

महाशय धर्मपाल जी ने किया कलिंगा इंडस्ट्रियल टैक्नालॉजी का अवलोकन

सराहना करते हुए सबको अपना स्नेहिल आशीर्वाद दिया।

महाशय जी के स्वागत में बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति

भुवनेश्वर में कलिंगा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल सांइसीज का वर्चस्व देखते ही बनता है। यहां 30 हजार से ज्यादा छात्र-छात्राएं अपने जीवन को विकसित और सफल बनाने में संलग्न हैं। इन सभी छात्र-छात्राओं ने महाशय जी के स्वागत-

की ऐसी दिव्य महान विभूति हैं। जहां-जहां आपके चरण पड़ते हैं- वहां-वहां प्रेम-प्रसन्नता-परिश्रम-पुरुषार्थ की प्रेरणा और सफलता के फूल खिल उठते हैं। कलिंगा इंस्टिट्यूट के सभी अधिकारी छात्र, छात्राएं, स्टाफ और उपस्थित गणमान्य अतिथियों के चेहरे उस टाइम खिल उठे जब इंस्टीट्यूट द्वारा महाशय धर्मपाल जी को "KISS लाइफ टाइम अचीवमैंट अवार्ड" से सम्मानित किया

जी का संदेश श्री विनय आर्य महामंत्री जी ने महाशय जी की उपस्थिति में बच्चों पढ़कर को सुनाया। इस अवसर पर महाशय जी ने बच्चों को उत्तम स्वास्थ्य, उत्तम व्यवहार, के साथ-साथ नैतिकता की शिक्षा देते हुए समाज और देश सेवा का भी संदेश दिया। महाशय जी ने कहा अपने जीवन के लक्ष्य और उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए पूरी लग्न और निष्ठा से आगे बढ़ो। सभी बच्चों को महाशय जी ने प्रेमपूर्ण आशीर्वाद दिया।

मुख्यमंत्री श्री नवीन पटनायक से भेंट

महात्मा गांधी जी के 150वीं जयन्ती के अवसर पर 'किस्स' संस्था द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति एवं छात्र-छात्राओं के बीच विराजमान महाशय जी।

इंस्टीट्यूट के 30 हजार बच्चों को अपना स्नेहिल आशीर्वाद एवं अनुभवी उद्बोधन के रूप में जीवन में सफलता के सूत्र प्रदान करते हुए महाशय धर्मपाल जी। साथ में हैं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी एवं कलिंगा इंस्टीट्यूट के पदाधिकारीगण।

आर्यसयमाज भुवनेश्वर में आयोजित यज्ञ में महाशय धर्मपाल जी, विनय आर्य जी, इं. प्रियव्रत दास जी, माता शन्नो देवी जी, एम.डी.एच. परिवार के श्री बिन्दल जी, आचार्य सुदर्शनदेव जी एवं आर्यसमाज के अन्य अधिकारी एवं कार्यकर्ता। इस अवसर पर श्रुतिन्यास के स्वामी सुधानन्द जी ने महाशय जी को पुस्तक भेंट कर स्वागत किया तथा श्री विनय आर्य जी के साथ वृक्षारोपण किया।

इसके उपरांत महाशय धर्मपाल जी, श्री विनय आर्य जी कलिंगा इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल सांइसीज द्वारा महात्मा गांधी के 150वी जन्म जयंती के अवसर पर आयोजित एक दिवसीय सेमिनार में पहुंचे। वहां पर इंस्टिट्यूट के समस्त अधिकारी छात्र-छात्राओं और अन्य अनेक गणमान्य महानुभावों ने महाशय जी का भव्य स्वागत किया। इस अवसर पर महाशय जी ने कलिंगा इंस्टीट्यूट के इंडस्ट्रियल टैक्नालॉजी डिपार्टमेंट का भी अवलोकन किया और इंस्टीट्यूट के प्रयासों की

अभिनंदन में कई सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। ज्ञात हो कि जब-जब महाशय जी बच्चों के बीच जाते हैं तो उन्हें अपना बचपन याद आ जाता है। 96 वर्षीय महाशय जी का कोमल मन भी बच्चे जैसा ही हो जाता है। बच्चों की भावपूर्ण प्रस्तुति से महाशय जी भाव विभोर हो गए और उन्होंने सभी बच्चों को प्रेमपूर्ण आशीर्वाद प्रदान किया।

महाशय जी को "KISS लाइफ टाइम अचीवमैंट अवार्ड"

पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी भारत

गया, चारों तरफ से तालियों की गड-गडाहट, महाशय जी का जय-जयकार होने लगा, कार्यक्रम स्थल पूर्ण उत्साह से सराबोर हो गया और महाशय जी ने अवार्ड को अपने सिर पर रखकर यह जता दिया कि चाहे मुझे भारत सरकार द्वारा भारत का तीसरा सबसे बड़ा पद्मभूषण सम्मान प्राप्त हो गया हो, लेकिन सम्मान तो सम्मान होता है, कलिंगा इंस्टीट्यूट का यह अवार्ड मैं सिरोधार्य करता हूं। सभी ने महाशय जी की इस महान उदात्त भावना को हृदय से समझा और कृतज्ञता एवं आभार व्यक्त किया।

महाशय जी का उदबोधन

इस अवसर पर महाशय जी ने इंस्टीट्यूट के लगभग 30 हजार विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए अपने सुदीर्घ अनुभवी उदबोधन में जीवन के सर्वांगीण विकास के संदेश प्रदान किए। महाशय

पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी ने इस महत्वपूर्ण एवं सारगर्भित प्रेरणा प्रद यात्रा के दौरान ओड़िशा के यशस्वी मुख्यमंत्री श्री नवीन पटनायक जी से भी भेंट की। इस अवसर पर दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी भी उपस्थित थे। लोक सेवा भवन में हुई इस भेंट में महाशय जी ने ओड़िशा के आदिवासी जिले कंधमाल में एक नई फूड पोसेसिंग यूनिट शुरू करने का प्रस्ताव रखा। इस महत्वपूर्ण प्रस्ताव का समर्थन करते हुए ओड़िशा के मुख्यमंत्री जी ने सरकार की तरफ से सहायता देने की बात कही और इस तरह महाशय जी प्रेम सौहार्द के वातावरण में प्रेरक और रचानात्मक कार्यों को गति प्रगति प्रदान करते हुए विनय आर्य जी के साथ दिल्ली लौट आए।

- ई. प्रियव्रत दास

MDH हवन सामग्री
मात्र 90/- किलो 5,10,20 किलो की पैकिंग
प्राप्ति स्थान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 1, मो. 9540040339

Mind - The Perceiver of Happiness and Sorrow

- Dharmpal Arya

Happiness should not be sought through the senses. Hap- piness and sorrow are the impressions of the mind. The senses are the agents through which we derive pleasures. But the en- joyer of those sensations is the mind. In other words happiness or sorrow is rooted in the mind. Happiness is not to be found in material objects nor in the gratification of the senses. It is to be found in our thoughts. Happiness and sorrow can be realised without visible objects by merely forming a mental picture of the situation. Devoted lovers sob or are happy when they think of their beloved. Our scriptures say:

Mana eva manushuanam /raranam bandha mobshauoh

(the sou rce of all our happiness and sorrows is the mind).

Our body and our senses are the means or agent through which we enjoy sensual objects. All our experiences, whether pleasant or unpleasant are received by the mind. It is for this reason that one likes a mango while another prefers to eat an apple. Some like sweet substances while others like spicy or peppery things. In the same object one will find enjoyment while another will experience pain. The senses are the same but mind and its impressions differ. That is why one man's meat is another's poison.

The mind is very imaginative. It can create an imaginary world of its own. In favourable circumstances it can experience joy or sorrow. A business executive can die of heart failure imagining that he would suffer a heavy loss. Swami Shradhanand under- went a major operation without the use of anaesthetic and never uttered a moan. The doctors who were wonderstruck ask ed him how he had been able to bear the pain. He replied that he had removed his mind from the part of the body where the operation took place. One man can enjoy mental satisfaction even when he has little to bless himself. Another, inspite of possessing much material wealth, may be always unhappy.

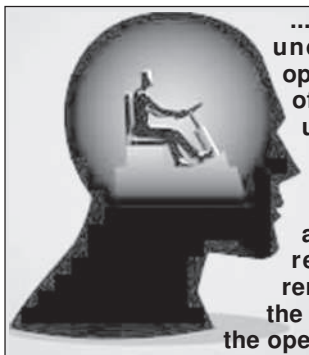

.....Swami Shradhanand under went a major operation without the use of anaesthetic and never uttered a moan. The doctors who were wonderstruck ask ed him how he had been able to bear the pain. He replied that he had removed his mind from the part of the body where the operation took place. One man can enjoy mental satisfaction even when he has little to bless himself. Another, inspite of possessing much material wealth, may be always unhappy.....

Our mental condition has a very great influence on our perception of the eternal world. It is the result of our imagination that external objects appear to us as good or bad, beautiful or ugly, pleasure-giving or tormenting. A troubled mind makes the tastiest meal tasteless. To swallow even a morsel of it will be hard. In the same way a person who has lost his beloved wife feels that everything around him is uninteresting and meaningless. The blossoming of flowers, the blowing of refreshing breezes, the chirping of birds, the flowing of waterfalls - all these depress him. In the same environment, a newly wed person who is in the company of his bride, finds everything bubbling with joy, attractive and full of life. All this shows that the enjoyer of happiness or sorrow is the mind.

Contentment is the Basis of Happiness

The mind experiences both sorrow and happiness. To rise above these states it is necessary to control the mind. The reaction of mind to favourable or unfavourable conditions decides the degree to which you experience sorrow or pleasure. The mind that desires wordly possessions and comforts becomes tormented when its desires are not fulfilled. Just as a horse that is running aimlessly needs a rein to control its movement, similarly our senses that crave for worldly pleasures and vices need a firm mind to control them. A controlled mind only is able to restrain the desires of our senses. When the mind has been controlled it reaches a state of equilibrium. Neither does it grieve when surmounted by difficulties nor does it rejoice when its desires are fulfilled. The mind can be brought to this state of equilibrium through contentment. When the mind is contented the person's desires for worldly pleasures come to an end. His desires would not be able to overpower his mind. ***- To be continue.....***

24वां आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन वाराणसी में

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में वाराणसी में आयोजित होने वाले स्वर्ण शताब्दी वैदिक धर्म महासम्मेलन के अवसर पर 24वें आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन 12 अक्तूबर, 2019 को प्रातः 10 बजे से आयोजन किया जाएगा।

सम्मेलन के राष्ट्रीय संयोजक श्री अर्जुन देव चड्डा जी के अनुसार सभी आय वर्ग एवं शैक्षिक योग्यता स्तर के युवक-युवतियों का यह परिचय सम्मेलन भव्य रूप से आयोजित होगा।

समस्त आर्य परिवारों से अनुरोध है कि अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्रियों के आर्य परिवारों से सम्बन्ध जोड़ने के लिए परिचय सम्मेलन में शीघ्रातिशीघ्र पंजीकरण कराने का कष्ट करें। पंजीकरण फॉर्म इसी पृष्ठ पर पृथक से प्रकाशित किया गया है। इस पंजीकरण फार्म को **www. thearya samaj.org** से डाउनलोड भी किया जा सकता है। **www. matrimony.thearyasamaj.org** पर ऑनलाईन पंजीकरण भी कर सकते हैं। फार्म की फोटो प्रति भी मान्य है।

- **अर्जुनदेव चड्ढा**
राष्ट्रीय संयोजक (मो. 9414187428)

पंजीकरण संख्या : ।। ओ३म्।। रसीद संख्या :

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में

24वाँ आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सम्मेलन कार्यालय : 15, हनुमान रोड़, नई दिल्ली - 110001 टेलिफैक्स :- 011-23360150, 23365959

Email: aryasabha@yahoo.com website : www.thearyasamaj.org

पंजीकरण प्रपत्र

: व्यक्तिगत विवरण :

"आवेदक अपना फोटो अनिवार्य रुप से लगाएं।"

1. युवक/युवती का नाम :..... गोत्र.....
2. जन्मतिथि:..... स्थान : .....
3. रंग..... वजन ..... लम्बाई .....
4. योग्यता (शैक्षणिक एवं अन्य) : .....
5. युवक/युवती सेवारत, व्यवसाय में है तो उसका विवरण/पता/.....
.....व्यक्तिगत मासिक आय.....

: पारिवारिक :

6. पिता/सरंक्षक का नाम ..... व्यवसाय: ..... मासिक आय.....
7. पूरा पता:.....
.....
दूरभाष :..... मोबा.:..... ईमेल :.....
8. मकान निजी/किराये का है.....
9. माता का नाम :..... शिक्षा :..... व्यवसाय : .....
10. भाई - अविवाहित.....विवाहित..... । बहिन- अविवाहित.....विवाहित..... ।
11. उम्मीदवार/अभिभावक किस आर्यसमाज के सदस्य हैं? (आवश्यक).....
12. युवक/युवती कैसी चाहिए (संक्षिप्त टिप्पणी दें) .....
13. युवक/युवती यदि इनमें से हो तो सही पर (✓) लगाएं : ☐ विधुर : ☐ विधवा : ☐ तलाकशुदा : ☐ विकलांग :
14. **विशेष:**

मैं.....घोषणा करता हूँ कि इस फार्म में मेरे द्वारा दी गई समस्त जानकरी एवं तथ्य पूर्णतया सत्य है।

दिनांक : .....

हस्ताक्षर अभिभावक/ प्रत्याशी

कार्यक्रम स्थल :- स्वर्ण शताब्दी वैदिक धर्म महासम्मेलन, रामनाथ चौधरी शोध संस्थान-वाटिका, सुन्दर पुर मार्ग, नरिया, लंका, वाराणसी

दिनांक :- 12 अक्टूबर शनिवार 2019 **समय :- प्रातः 10.00 बजे से**

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

श्री अर्जुनदेव चड्ढा, राष्ट्रीय संयोजक मो. 09414187428

श्री अरुण सैनी (दिल्ली का.) मो. 08527557756 श्री विजय आर्य (वाराणसी का.) मो. 09335369078

नोट : 1. ई-मेल एड्रेस, मोबाईल व फोन नम्बर लिखना आवश्यक है

2. विक्लांग युवक-युवतियों तथा विधवा एवं तलाकशुदा युवतियों के लिये रजिस्ट्रेशन शुल्क 50% छूट होगी।
3. विवाह सम्बन्ध बनाने से पूर्व दोनों पक्ष अपनी पूर्ण सन्तुष्टि कर लें। सभा इसके लिए उत्तरदायी नहीं होगी।
4. आप इस फार्म को www.thearyasamaj.org से डाउनलोड कर भेज सकते हैं। फोटो कॉपी प्रति भी मान्य है।
यह फार्म ऑनलाइन भी भर सकते हैं लिंक - matrimony.thearyasamaj.org
5. पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ दिल्ली आर्य प्रतिनिधी सभा नई दिल्ली के नाम रु. 300/-(तीन सौ रुपये) का डिमांड ड्राफ्ट संलग्न कर अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम एक्सिस बैंक खाता सं. 910010001816166 करोल बाग शाखा IFSC-UTIB 0000223 में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेजें। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.), 15- हनुमान रोड़, नई दिल्ली-1 के पते पर कार्यालय में सम्मेलन की तारीख से 10 दिन पूर्व भेज दे, ताकि प्रत्याशी का विवरण पुस्तिका मे प्रकाशित किया जा सके।
6. माता-पिता/अभिभावक रजिस्ट्रेशन शुदा पुत्र/पुत्री को सम्मेलन में अवश्य लावें। कॉलम नं. 11 भरना आवश्यक है।
7. रजिस्ट्रेशन शुल्क 300/- प्राप्त किये जाने पर ही रजिस्ट्रेशन फार्म स्वीकार किया जायेगा।

युवक और युवतियाँ परस्पर एक-दूसरे के गुण-कर्म और स्वभाव मिलने पर ही विवाह करें- महर्षि दयानन्द सरस्वती

आर्यसमाज नजफगढ़ दिल्ली का 107वां वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज नजफगढ़ दिल्ली-43 का 107वां वार्षिकोत्सव समारोह 18-19-20 अक्तूबर, 2019 को हनुमान मन्दिर धर्मशाला, धर्मपुरा, नजफगढ़ में मनाया जाएगा। इस अवसर पर यज्ञ, भजन एवं प्रवचनों के विशेष कार्यक्रम होंगे।

- डॉ. बी.डी. लाम्बा, मन्त्री

आर्यसमाज दयानन्द विहार, दिल्ली का 34वां वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज दयानन्द विहार दिल्ली का 34वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर दिनांक 9-13 अक्तूबर तक गायत्री महायज्ञ, गीता उपदेश, भजन व प्रवचनों के विशेष आयोजन होंगे। आचार्या आयुषी शास्त्री एवं आचार्या अमृता शास्त्री जी के उद्बोधन होंगे। समापन समारोह के अवसर पर 13 अक्तूबर को अखण्ड राष्ट्र सम्मेलन प्रात: 9:30 से 1 बजे तक आयोजित किया जाएगा। *- ईश नारंग, मन्त्री*

आर्यजन ध्यान दें

समस्त आर्य परिवारों से निवेदन है कि यदि आपके कोई सम्बन्धी/रिश्तेदार/परिचित या आर्य विचारधारा से प्रेरित कोई व्यक्ति भारत के अन्दमान-निकोबार, लक्ष्यद्वीप या गोवा में रहते हैं अथवा नौकरी करते हैं तो कृपया उनका नाम, पता, दूरभाष तथा ईमेल हमें भेजने की कृपा करें ताकि उनसे सम्पर्क करके वहां आर्यसमाज की स्थापना का प्रयास किया जा सके। *-मन्त्री, सार्वदेशिक सभा*

ईमेल : aryasabha@yahoo.com

ब्रेल लिपि में

महर्षि दयानन्द जीवनी

मात्र 1000/-रु

ब्रेल लिपि में

सत्यार्थ प्रकाश

मात्र 2000/-रु

अपने क्षेत्र के नेत्रहीनों/अंध विद्यालयों को अपने आर्यसमाज की ओर से भेंट करें।

-: प्राप्ति स्थान :-

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.)

आर्यसमाज कोटा राजस्थान निरंतर कर रहा है सेवा के प्रेरक कार्य

गऊ को रोटी खिलाने का संकल्प

26 सितम्बर 2019 आर्य समाज द्वारा रावतभाटा नया बाजार में गायों के लिए रोटी का पात्र रखकर एक रोटी प्रतिदिन खिलाने का संकल्प लिया गया। इस अवसर पर पूर्व जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा के प्रधान श्री अर्जुनदेव चड्डा एवं उनकी पूरी टीम उपस्थित थी।

वृद्ध योग साधकों का सम्मान

27 सितम्बर। आर्य समाज विज्ञान नगर में संचालित योग समिति द्वारा वृद्ध योग साधकों का सम्मान किया गया। इस अवसर पर श्री राकेश चड्ढा, वैदिक विद्वान पंडित शोभाराम आर्य, कार्यक्रम में पतंजलि भारत स्वाभिमान के राज्य प्रभारी अरविंद पांडेय रावतभाटा, आर्य समाज के प्रधान नरदेव आर्य द्वारा योग समिति के सम्मान कार्यक्रम में साधकों को शॉल ओढ़ाकर पुष्प माला पहना व तिलक लगाकर सम्मान किया गया।

कपड़ो की थैली का वितरण

29 सितम्बर। पॉलिथीन की थैलियों का उपयोग न करें इस विचार को फैलाने के लिए और लोगों को प्रेरणा देने के लिए पूर्व जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने रावतभाटा में लोगों को कपड़े के थैले बांटते हुए चड्ढा ने सिंगल यूज प्लास्टिक अभियान का शुभारंभ करते हुए नया बाजार हाट बाजार चौक सब्जीमंडी में खरीददार लोगों को कपड़े के थैले वितरित किए।

आर्यसमाज के भजनों के संग्रह हेतु - आवश्यक सूचना

यह सर्वविदित है कि आर्य समाज के भजन सारगर्भित और भावपूर्ण होते हैं। इसके लिए भजनों के लेखकों और मधुर भजन गायकों को बहुत-बहुत बधाई। भजनों का आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में बहुत बड़ा योगदान है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का आर्य जगत् के सभी भाषाओं के भजनोपदेशकों और भजन लेखकों से अनुरोध है कि आप अपने मधुर भजनों की रिकार्डिंग दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को ईमेल पर भेजकर वैदिक धर्म-संस्कृति और संस्कारों के प्रचार-प्रसर में सहयोग प्रदान करें। दिल्ली सभा का प्रयास है कि विश्व भर में आर्य समाज के भजनोपदेशकों के भजनों को संग्रहीत कर सुरक्षित किया जाए। जिससे आर्य समाज की आने वाली पीढ़ियां भी मधुर भजनों का श्रवण करें और प्रेरणा प्राप्त करके आगे बढ़े।

कृपया अपने भजन सीडी/डी.वी.डी/पैन ड्राइव के माध्यम से **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा-15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001** के पते पर भेजें अथवा **aryasabha@yahoo.com** पर ईमेल करें अथवा **9540045898 पर व्हाट्एप्प** करें। *- महामन्त्री*

81वां वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज कोसी कलां, जिला मथुरा का 81वां वार्षिकोत्सव समारोह 9-12 अक्तूबर, 2019 को आर्यसमाज धर्मशाला आर्यनगर, कोसीकलां में मनाया जाएगा। जिसमें भजन, वैदिक प्रवचन एवं सुख समृद्धि महायज्ञ का आयोजन होगा।

- विजय कुमार आर्य, मन्त्री

पृष्ठ 3 का शेष

सैंकड़ों शब्द बनते हैं। यात्राओं के इसी क्रम में संस्कृत का **सिन्धु** (मूलत: पानी, सागर, फिर नदी विशेष, फिर उस नदी के आस-पास का प्रदेश) स्थान-भेद और काल-प्रवाह के साथ अरबी और फारसी में **हिंद** (=भारत; भारतीय);(**हिन्दू** (=भारतीय, भारत के निवासी);(फारसी में **हिंदी** (=भारतीय या हिंद का; भारत की कोई भी वस्तु); चीनी में **शनदू/इंदु/इंतु** (=भारत);(तुर्की में **हिंदिया** तथा रूसी में **ईंजिया** बन गया। इससे आगे बढ़ते हुए जब इसने ग्रीक में **इंदीअ** (=भारत), वहाँ से लैटिन में जाकर **इंदिया** और फिर अंग्रेजी तक पहुंचकर **इंडिया** रूप धारण कर लिया तो बहुतों ने सोचा कि अंग्रेजों ने हमारे देश का नाम बदलकर बड़ी साजिश रच डाली है। **- एम.-93, साकेत नई दिल्ली-110017**

शोक समाचार

पूर्व सांसद श्री बैकुण्ठलाल शर्मा का निधन

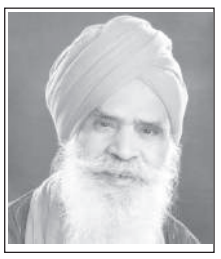

पूर्व दिल्ली क्षेत्र से दो बार सांसद रहे विश्व हिन्दू परिषद् के केन्द्रीय मन्त्री श्री बैकुण्ठ लाल शर्मा प्रेम (प्रेम सिंह 'शेर') का 90 वर्ष की आयु में 28 सितम्बर को निधन हो गया। अखण्ड हिन्दुस्तान मोर्चा के संस्थापक संरक्षक एवं अखण्ड भारत के सम्पादक श्री शर्मा का अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ 30 सितम्बर को निगमबोध घाट पर किया गया।

श्री सुरेन्द्र आर्य (गुप्ता) जी को भ्रातृशोक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री सुरेन्द्र आर्य (गुप्ता) जी एवं आर्यसमाज नारंग कालोनी, त्रिनगर के संरक्षक श्री राजेन्द्र आर्य जी (हांसी वाले) के भाई एवं आर्यसमाज मोहद्दीन पुर के पूर्व प्रधान श्री महावीर अग्रवाल जी का 28 सितम्बर, 2019 को सायंकाल 6:30 बजे दिल्ली में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से निगम बोध धाट पर किया गया।

उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 6 अक्तूबर, 2019 को आर्यसमाज रोहिणी सै.-7 में सायं 3:30 बजे से आयोजित की जाएगी।

श्री हर्षदेव सिन्हा जी का निधन

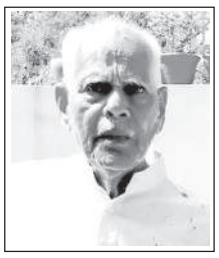

आर्यसमाज डी ब्लाक जनकपुरी, नई दिल्ली के पूर्व प्रधान श्री हर्षदेव सिन्हा जी का 29 सितम्बर, 2019 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ 30 सितम्बर को दिल्ली कैंट शमशान घाट पर किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 2 अक्तूबर को आर्यसमाज डी ब्लाक जनकपुरी में सम्पन्न हुई।

स्वामी डॉ. शारदानन्द सरस्वती जी का निधन

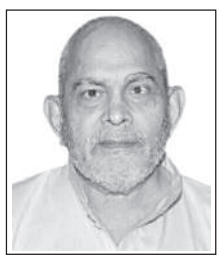

दयानन्द विद्यापीठ न्यास, आबूरोड के न्यासी एवं श्री वैदिक कन्या विद्यालय आबूरोड के मार्गदर्शक स्वामी डॉ. शारदानन्द जी सरस्वती का 29 सितम्बर, 2019 को आर्यसमाज कांकरिया, अहमदाबाद में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ अहमदाबाद स्थित शमशान घाट में यिा गया।

श्री लाखन सिंह आर्य का निधन

आर्यसमाज हिम्मतपुर काकामई, एटा (उ.प्र.) के संस्थापक सदस्य श्री लाखन सिंह आर्य जी का 28 सितम्बर, 2019 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से उनके पैत्रक गांव हिम्मतपुर काकामई मे किया गया। उन्होंने आर्यसमाज शक्ति नगर दिल्ली के माध्यम से लगभग 40 वर्ष तक पाचक के रूप में अपनी सेवाएं दीं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6

Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 30 सितम्बर, 2019 से रविवार 6 अक्तूबर, 2019

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 3-4 अक्तूबर, 2019

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: गुरुवार 3 अक्तूबर, 2019

एकरूपीय यज्ञ प्रशिक्षण शिविर आरम्भ

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 में 10,000 याज्ञिकों द्वारा किया गया एकरूप यज्ञ के विहंगम दृश्य के सम्पूर्ण विश्व के आर्यजन साक्षी रहे। यज्ञ का यह अनुपम दृश्य आर्य समाज के इतिहास में एक महान कीर्तिमान है। इस क्रम में भविष्य में भी ऐसे वृहद यज्ञ के आयोजन हेतु दिल्ली के समस्त आर्य विद्यालयों एवं गुरुकुलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को यज्ञ प्रशिक्षण देने के लिए विशाल प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। इसके लिए आर्य विद्यालय एवं गुरुकुलों के अधिकारीगण योजना बनाए और सामूहिक रूप से विद्यार्थियों को यज्ञ प्रशिक्षण की कक्षाओं का आयोजन करें। इसके लिए सभा की ओर से प्रशिक्षक की भी व्यवस्था की जाएगी।

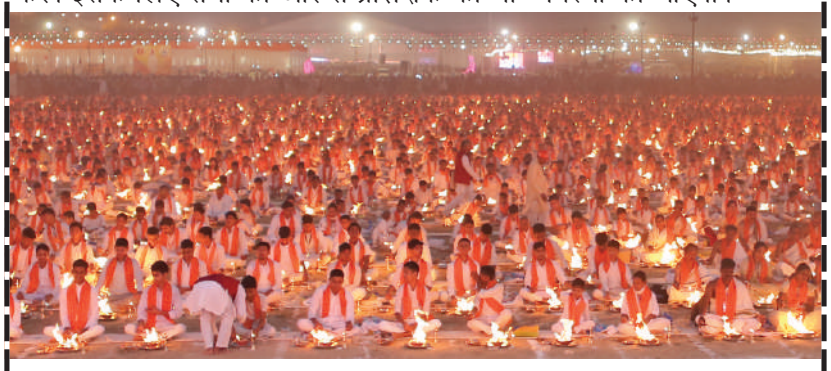

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें- - सतीश चड्डा, महामंत्री, आर्य केंद्रीय सभा, दिल्ली राज्य, मो. 9313013123

प्रतिष्ठा में,

ओ३म्
thearyasamaj.org

एक करोड़ नब्बे लाख+

लोगों ने अब तक देखा

आर्यसमाज YouTube चैनल

आप भी देखें और सब्सक्राइब अवश्य करें और अपने मित्रों, सम्बन्धियों को देखने की प्रेरणा करें।

यदि आप लगातार नई वीडियो देखना/सूचना प्राप्त करना चाहते हैं तो घंटी का बटन दबाकर सब्सक्राइब करें।

आप भी अपने आर्यसमाज के आयोजनों - भजन, प्रवचन, सन्देशात्मक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को इस चैनल पर अपलोड कराने के लिए upload@thearyasamaj.org पर भेजें। - महामन्त्री

यज्ञ कुण्ड सैट प्राप्त करें

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली 2018 में 10,000 याज्ञिकों द्वारा एकरूप यज्ञ के विहंगम दृश्य आपने अवश्य देखा होगा। महासम्मेलन में प्रयुक्त किए गए यज्ञ कुण्ड सैट आपके परिवार, संस्था, समाज में प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा दैनिक यज्ञ प्रेमियों के लिए उपलब्ध।

मूल्य
मात्र 900/- रुपये

देश और समाज विभाजन के षड़यन्त्र का पर्दाफास

आओ! जानें मनुस्मृति का सच

स्वाध्याय के लिए प्रक्षेप रहित संस्करण

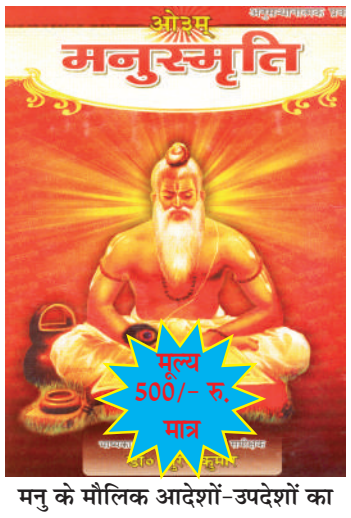

मनु के मौलिक आदेशों-उपदेशों का प्रसंगबद्ध वर्णन होने से स्वाध्यायशील महानुभावों के लिए परम उपयोगी।

मूल्य : ~~600~~/- 500/-

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें

वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह